खुद चैतन्य शिव यहाँ

चढ़ा रहे हो तुम जल शिवलिंग पर वहाँ,
खुद चैतन्य शिव यहाँ अमृत पिलाने आए हुए हैं।
कर रहे हो भेंट बेल-पत्र-अक, पत्थर पे वहाँ,
वो खुद यहाँ तेरी सारी कड़वाहट पीने आए हुए हैं।
बजा रहे हो तुम घण्ट-नाद मन्दिरों में वहाँ,
खुद चैतन्य शिव यहाँ हर घर मन्दिर बनाने आए हुए हैं।
घोट-घोट भाँग-धतूरा, पीने वाले सुन जरा,
वो खुद आत्म-चिंतन घोटना सिखाने आए हुए हैं।
सारी-सारी रात कीर्तन करने वाले,
खुद चैतन्य शिव यहाँ तुम्हें कीर्ति योग्य बनाने आए हुए हैं।
उठ जाग निकल शव रात से शिव रात्रि पर,
शिव बाप खुद आप तेरी रात मिटाने आए हुए हैं।
लम्बे-लम्बे तिलक लगा के नमः-नमः करने वाले,
वो तुझे गले लगा के पूज्य बनाने आए हुए हैं।
आओ! आओ! अज्ञान अन्धकार मिटाओ, चूक न जाना,
ज्ञान सूर्य स्वयं धरा पर आए हुए हैं।
खोज रहा जन-जन, कण-कण में,
वो चैतन्य शिव होके प्रत्यक्ष, समक्ष गीता ज्ञान सुनाने आए हुए हैं।
बजाओ नगाड़े, लगाओ नारे, बाल-युवा-वृद्ध सारे,
सुनो! खुद चैतन्य शिव फिर से पावन बनाने आए हुए हैं।

ओम् शान्ति